राज
कामिक्स
विशेषांक
मूल्य 16.00 संख्या 111

डोगा-शक्ति

आकर्षक
स्टीकर मुफ्त

नागराज सीरीज के उपलब्ध कॉमिक व विशेषांक

- ☐ नागराज
- ☐ नागराज की कब्र
- ☐ नागराज का बदला
- ☐ हांगकांग यात्रा
- ☐ नागराज और शांगों
- ☐ खूनी खोज
- ☐ खूनी यात्रा
- ☐ नागराज का इंसाफ
- ☐ खूनी जंग
- ☐ प्रलयंकारी नागराज
- ☐ खूनी कबीला
- ☐ कोबरा घाटी
- ☐ बच्चों के दुश्मन
- ☐ प्रलयंकारी मणि
- ☐ शंकर शहंशाह
- ☐ नागराज का दुश्मन
- ☐ इच्छाधारी नागराज
- ☐ नागराज और कालदूत
- ☐ जादूगर शाकूरा
- ☐ नागराज बौना शैतान
- ☐ ताजमहल की चोरी
- ☐ नागराज और लाल मौत
- ☐ काबुकी का खजाना
- ☐ नागराज और थोड़ांगा
- ☐ नागराज और तूफान जू
- ☐ जादू का शहंशाह
- ☐ अजगर का तूफान
- ☐ बकोरा का जादू
- ☐ पिरामिडों की रानी
- ☐ नागराज और मिस्टर 420
- ☐ थोड़ांगा की मौत
- ☐ बेमबेम बिगेलो
- ★ नागराज और सुपर कमांडो ध्रुव
- ★ नगीना का जाल
- ★ नागराज और बुगाकू
- ★ फिर आया नागदंत
- ★ नागराज और नगीना
- ★ नागराज और मिस किलर
- ★ विजेता नागराज
- ★ विसर्पी की शादी
- ★ शाकूरा का चक्रव्यूह
- ★ नागराज का अंत
- ★ जहर
- ★ नागपाशा
- ★ खजाना
- ★ क्राइम किंग
- ★ विषकन्या
- ★ स्नेक पार्क
- ★ इच्छाधारी
- ★ केंचुली
- ★ जहरीले
- ★ बाँबी
- ● राजनगर की तबाही
- ● प्रलय
- ● विनाश
- ● तानाशाह
- ● सूरमा

सुपर कमांडो ध्रुव के उपलब्ध कॉमिक व विशेषांक

- ☐ प्रतिशोध की ज्वाला
- ☐ रोमन हत्यारा
- ☐ आदमखोरों का स्वर्ग
- ☐ स्वर्ग की तबाही
- ☐ मौत का ओलंपिक
- ☐ समुद्र का शैतान
- ☐ बर्फ की चिता
- ☐ रूहों का शिकंजा
- ☐ लहू के प्यासे
- ☐ महामानव
- ☐ वू-डू
- ☐ मुझे मौत चाहिए
- ☐ बहरी मौत
- ☐ उड़नतश्तरी के बंधक
- ☐ एक दिन की मौत
- ☐ विनाश के वृक्ष
- ☐ चैंपियन किलर
- ☐ आखिरी दांव
- ☐ वीडियो विलेन
- ☐ पागल कातिलों की टोली
- ☐ ब्लैक कैट
- ☐ रोबो का प्रतिशोध
- ☐ दलदल
- ☐ उड़ती मौत
- ☐ चंडकाल की वापसी
- ★ ग्रेण्ड मास्टर रोबो
- ★ आवाज की तबाही
- ★ खूनी खिलौने
- ★ किरीगी का कहर
- ★ चुम्बा का चक्रव्यूह
- ★ डॉक्टर वायरस
- ★ सामरी की ज्वाला
- ★ आत्मा के चोर
- ★ वैम्पायर
- ★ सुग्रीमा
- ★ मैंने मारा ध्रुव को
- ★ हत्यारा कौन
- ★ सर्कस
- ★ हत्यारी राशियां
- ★ मौत के चेहरे
- ★ कमांडर नताशा
- ★ सजाए मौत
- ★ अंधी मौत
- ★ षड्यंत्र
- ★ महाकाल
- ★ खूनी खानदान
- ★ अतीत
- ★ जिग्सा
- ★ ध्रुव शक्ति

☐ इस निशान वाली कॉमिकों का मूल्य : 8.00
★ इस निशान वाली कॉमिकों का मूल्य : 16.00
● इस निशान वाली कॉमिकों का मूल्य : 25.00

मुफ्तः 20/- मूल्य का नागराज का एक आकर्षक पर्स

आप अपनी पसंद की कोई भी सौ रुपये मूल्य की कॉमिकें 100/- का मनीआर्डर भेजकर घर बैठे रजिस्टर्ड पैकेट द्वारा प्राप्त करें। यदि आप 200/ की कॉमिकें मंगवाएंगे तो 2 पर्स मुफ्त पाएंगे। मनीआर्डर 'राजा पॉकेट बुक्स' 330/1, बुराड़ी, दिल्ली-110084 के पते पर भेजें। मनीआर्डर फार्म पर आप अपना नाम व पता साफ-साफ लिखें। मनीआर्डर फार्म के नीचे साइड पर आप अपनी इच्छित कॉमिकों का नाम लिखकर भेजें। आप अपनी पसंद की कॉमिकों का आदेश पोस्टकार्ड पर भी लिखकर भेज सकते हैं।

© RAJA POCKET BOOKS

डोगा शक्ति

लेखक ● तरुण कुमार वाही
सहलेखक ● संजय गुप्ता, विशेष सहयोग ● विवेक मेहन
चित्रांकन ● मनु
सम्पादन ● मनीष गुप्ता
रंग ● सुनील पाण्डेय

सदियों से नारी पर जुल्म होता आया है। अपने कोमल स्वभाव के कारण नारी जुल्म सहती आई है। और जब-जब उसने इन जुल्मों के खिलाफ आवाज उठाई, तब-तब उस पर जुल्म और बढ़ गया–

©RAJA POCKET BOOK

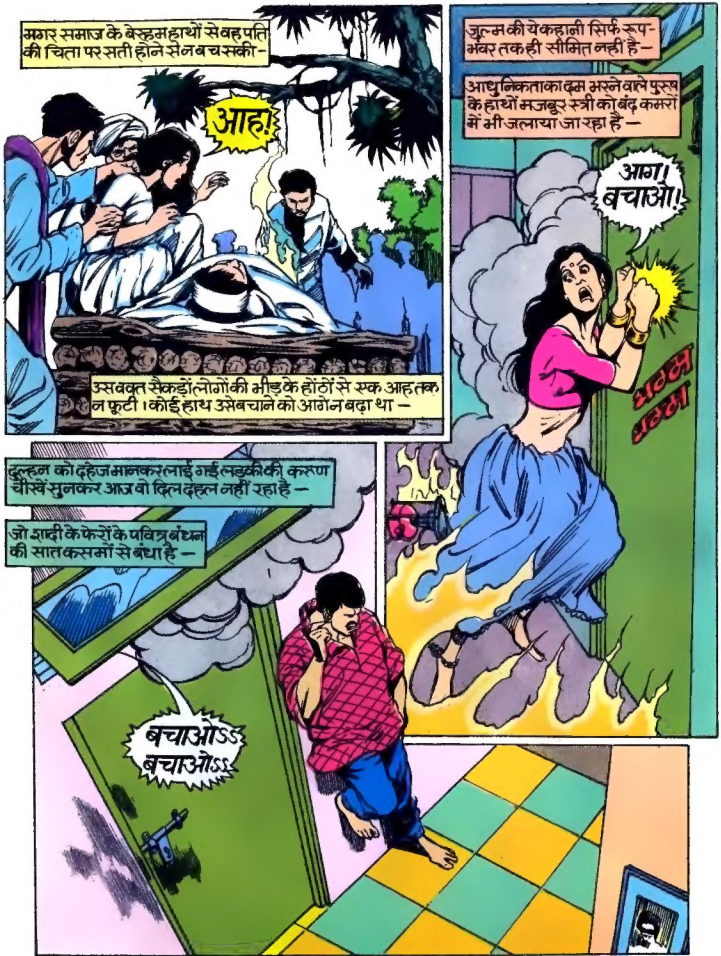
अगर समाज के बेरहम हाथों से वह पति की चिता पर सती होने से न बच सकी –
आह!
उस वक्त सैकड़ों लोगों की भीड़ के होंठों से एक आह तक न फूटी। कोई हाथ उसे बचाने को आगे न बढ़ा था –
जुल्म की ये कहानी सिर्फ रूप-नगर तक ही सीमित नहीं है –
आधुनिकता का दम भरने वाले पुरुष के हाथों मजबूर स्त्री को बंद कमरों में भी जलाया जा रहा है –
आग! बचाओ!
धक् धक्
दुल्हन को दहेज मानकर लाई गई लड़की की करुण चीखें सुनकर आज वो दिल दहल नहीं रहा है –
जो शादी के फेरों के पवित्र बंधन की सात कसमों से बंधा है –
बचाओऽऽ बचाओऽऽ

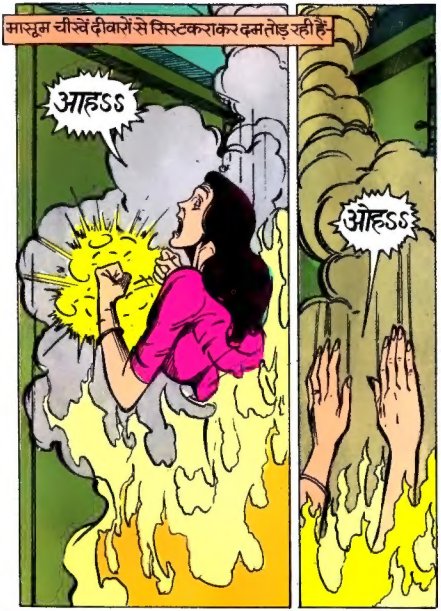
मासूम चीखें दीवारों से सिर टकराकर दम तोड़ रही हैं
आहऽऽ
ओहऽऽ

मगर पुरुष के लिये जैसे वो स्क स्क्वेन है। क्योंकि स्क चिता की आग ठण्डी भी नहीं होने पाती और उसका ये घिनौना स्क्वेन फिर से शुरू हो जाता है
ओउम् विष्णुधाय नमः

पुरुष को जन्म देने वाली नारी को हेय दृष्टि से देखा जाता है। तब-जब वह कन्या को जन्म देती है —
कन्या की जिन्दगी का सौदा चंद रुपयों में कर दिया जाता है—
किसी को कानों-कान खबर नहीं होनी चाहिए डॉक्टर!

पर जब उस पाप का भनक उस मां को लगती है जिसने अपना खून पिला कर उस फूल को सींचा था तो दहल जाता है उसका सीना—
ये क्या कर रहे हो डॉक्टर! इसे कैसा इंजेक्शन दे रहे हो ?
इंजेक्शन देना जरूरी है चंदा! तुम ज्यादा मत बोलो।
म...मगर ये तो इंजेक्शन लगते ही बुरी तरह से तड़पने लगी है।
इसका जिस्म ऐंठने लगा है...
इसे...इसे मुझे दो!
और -
ये तो मर चुकी है। क्या किया है तुमने मेरी बच्ची के साथ?
कैसा इंजेक्शन दिया है इसे डॉक्टर?
मासूम नवजात बच्ची पर पुरुष के जुल्म की इस पराकाष्ठा से तड़प उठी एक मां –
ओह! आज मुझे पता चला दिनेश कि मेरा बच्चा हर बार मरा हुआ क्यों पैदा होता है?
क्योंकि वो लड़की के रूप में होता है।
तुम मेरी कई बच्चियों के हत्यारे हो।

मैं तुम्हें तुम्हारे इस गुनाह की सजा दिलवा कर रहूंगी।
हह....

सजा का नाम सुनते ही भड़क उठा था दिनेश-
इससे पहले मैं तेरे हाथ-पांव तोड़ डालूंगा।
ओह!
सुहाग की चूड़ियों को चकनाचूर करते चले गए दिनेश के हाथ-

स्क बेटा तो दे नहीं सकी। उल्टे मुझ पर ही गुर्राती है। मुझे सजा दिलवाने की धमकी देती है।
आह!
हिंसक हो चुके दिनेश ने नोच डाली उसकी बिंदिया भी-

उसके चेहरे के चप्पे-चप्पे से उस वक्त वहशियत टपक रही थी-
जान से मार डालूंगा मैं तुझे।
फिर इससे पहले कि दिनेश सीजेरियन चाकू चंदा के पेट में उतार देता...

...उसका हाथ डॉक्टर ने थाम लिया-
ये क्या कर रहे हो? मेरे क्लिनिक पर मर्डर करोगे? मेरा धन्धा चौपट करने का इरादा है क्या?
मैं इसे जिन्दा नहीं छोड़ूंगा डॉक्टर। वरना ये हम दोनों को फंसवा देगी।
मगर इसे खत्म करने के लिये चाकू की नहीं दिमाग की जरूरत है। ये देखो।
आ...आह!
इसने अभी-अभी एक बड़े ऑपरेशन के बाद बच्ची को जन्म दिया था।
इसके घाव अभी ताजे हैं।
जिन में से अब बेशुमार खून निकलेगा!
आह!
ये तो ऐसे ही मर जायेगी।
पीड़ा से छटपटाता उसका चेहरा स्विंचकर बेहोशी की चादर लपेटता चला गया। तब-
अब क्या करें डॉक्टर?
मैं रूम्बूलेंस का इंतजाम करवाता हूं। तुम इसे इसी हालत में मौत की काली घाटी में धकेल आओ। अब यही इसका इलाज है और यही इसका अंजाम भी।
अपने अंजाम से नहीं थर्रा रहे थे उनके जिस्म-

अपने कुटिल इरादों से इंसान कितनी भी कोशिश क्यों न कर ले...
AMBULANCE

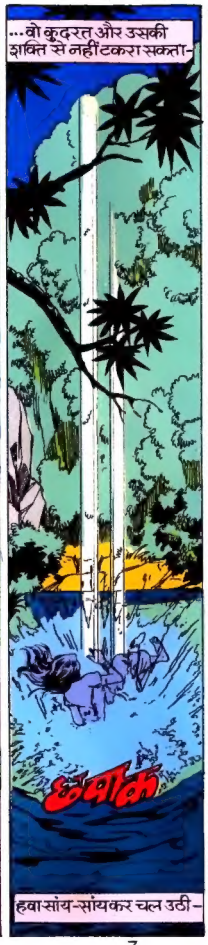
...वो कुदरत और उसकी शक्ति से नहीं टकरा सकता-
धधाक
हवा सांय-सांयकर चल उठी-

हवा की तीव्रता ने जैसे झंझोड़ डाली खण्डहर हो चुके उस प्राचीन मंदिर की दीवारें -
टन
टन
टन
टन्न
टन्न

उन मजबूर और बेबस हाथों ने उन आवाजों को और भी प्रचण्ड रूप दे दिया
टन्न टन
उस आवाज के रूप में जैसे समस्त स्त्री जाति के क्रोध की ऊष्मा भर गई थी –
आह्हा!
मेरी तो एक बच्ची पर जुल्म ढाया गया तो मेरी छाती पीड़ा से फट गई।...
...मगर तेरी तो लाखों बेटियों पर जुल्म ढाया जा रहा है। नोचा जा रहा है उनके सुहाग चिन्हों को!
आ! पत्थर की मूर्ति से बाहर आकर देख!
देख, ममता के छलनी कर दिये गये इस सीने को!

तू तो जगत माता है।...
...क्या तुझे पीड़ा नहीं होती मां?
अगर तू सिर्फ मनुष्य की कपोल कल्पना नहीं है तो फिर क्यों नहीं अपना आवरण तोड़ कर प्रकट होती।
...क्यों नहीं नारी जाति की रक्षा के लिये भेजती कोई ऐसी अवतार जो पुरूषों के हाथों नारी पे पल-पल होते अपमान व जुल्म को मिटा सके।
पर नहीं। तू ऐसा कुछ नहीं करेगी।
इस समाज में नारियां पति की चिता के साथ जिन्दा सती की जाती रहेंगी।
दहेज की आग में जलाई जाती रहेंगी। उनकी कोख को लहूलुहान किया जाता रहेगा।
मासूम बच्चियों के जन्म से भी पहले उनकी हत्याएं की जाती रहेंगी।

नारी इस पृथ्वी की रचना है। वो फिर भी पुरुषों की गुलाम बनी रहेगी।
कमजोर व अबला ही कहलायेगी वो।
मगर तेरी बनाई इस पुरुष प्रधान दुनिया में चंदा जिन्दा नहीं रहेगी।
धक् धक्
तेरी चौखट पर सिर पटक-पटक कर अपनी जान दे देगी।
धक् धक् धक्
और... और ये तेरी हार होगी। हां मां हां। ये तेरी हार होगी।

फिर इससे पहले कि उसका सिर फट जाता, फट गया उस पत्थर का सीना —
धड़ाम
कहते हैं सच्ची पुकार तो बारूद से भी ज्यादा शक्तिशाली होती है-
'आह' के आंसुओं में प्रलय मचा देने की भी ताकत होती है —
और आज ये कहावतें सच होने जा रही थीं-
चंदा की आंखें अविश्वसनीय भाव लिये फैल गई थीं। मानो कोई दिव्य स्वप्न देख रही हों-
ईश्वर ने पुरुष को स्त्री से अधिक शक्तिशाली इसलिए बनाया था कि...
...वो स्त्री की रक्षा करे।
एक अलौकिक प्रकाश से मंदिर का चप्पा-चप्पा प्रकाशमय हो उठा-
सम्पूर्ण पवित्रता का अहसास लिये गूंज उठा वो दैवीय स्वर-
ठहर जा पुत्री! देख। तेरी पुकार की शक्ति मुझे यहां खींच लाई है।

मगर पुरुष निरंतर शक्ति के नशे में चूर नारी पर जुल्म करता आ रहा है।...
...उसके शरीर का रोम-रोम नारी का ऋणी है...
...नारी ही पुरुष की शक्ति है।...
...वो ये भूल गया कि उसकी शक्ति का सार नारी का वो दूध ही है, जो उसकी रगों में खून बनकर दौड़ता है...
...क्योंकि शक्ति खुद नारी का ही रूप है।...
...बिना शक्ति के सृष्टि के संहारक शिव भी 'शव' के समान निस्तेज हैं...
...इसी सत्य का आभास शक्ति के मद में चूर पुरुष को कराने के लिये पुत्री चंदा तुझे बनना ही होगा...
ऐ....

★ शिव पर 'इ' की मात्रा स्त्री लिंग है और नारी शक्ति का प्रतीक है।

...शक्ति!
पुरुष के जुल्म के शिकार तेरे इस विकृत शरीर को मैं अपना शक्ति-रूप प्रदान करती हूँ।
तेरे नोचड़ाने पर सुहाग चिन्ह 'बिन्दिया' के स्थान पर मैं तुझे देती हूँ शिव की तीसरी आंख की शक्ति।
रगड़ रगड़
दिलंचस्प
तुझे विश्व की समस्त भाषाओं का ज्ञान होगा।
अफ्रीकी
जापानी
हिन्दी
चीनी
लेटिन
अंग्रेजी
नेपाली
रूसी
उस एक ही पल में चंद्रा का पूरा जिस्म नीला पड़ गया था। मानो समस्त नारी जगत के आक्रोश का जहर उसकी रगों में भर गया था –
पृथ्वी की प्रत्येक नारी से तेरा सम्पर्क होगा।

मेरे सभी अतिविध्वंसक शस्त्रास्त्र तेरे अधीन होंगे।
तेरे दायें हाथ में तू जब चाहेगी उन समस्त नारियों के क्रोध व नफ़रत की भीषण ऊष्मा पैदा होगी, जो पुरुषों के अहम व जुल्म का शिकार हो चुकी हैं या हो रही हैं।
ये आग इस्पात को भी मोम की तरह पिघला देगी!...
अब तू शीतल चांदनी बिखेरने वाली चंदा नहीं पुरुष के अहम को चकनाचूर कर डालने वाली आग, 'शक्ति' है!
शक्ति!
हां! यही आज से तेरा नाम होगा...
...किसी भी धातु को उस वक्त तू मन चाहे शस्त्रास्त्र में परिवर्तित करके अपराधी पुरुषों को सजा दे सकेगी!
धड़ेऽऽऽ

...शक्ति
टन्न
टन्न
उसका चेहरा उस वक्त ऐसे भभक उठा था जैसे पृथ्वी के गर्भ में दबा कोई लावा ज्वालामुखी का मुंह फोड़ कर बाहर आने वाला हो–

अभी मंदिर से बाहर जाने के लिये एक कदम ही उसने आगे बढ़ाया था कि उस चीख की आवाज से जहां का तहां जाम हो गया वह कदम–
बचाओ!

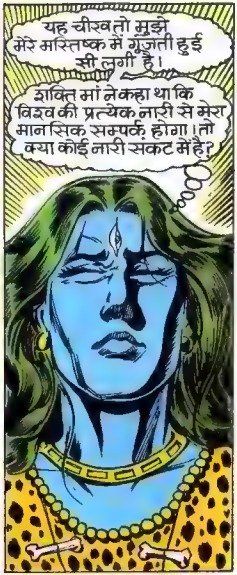
यह चीख तो मुझे मेरे मस्तिष्क में गूंजती हुई सी लगी है!
शक्ति मां ने कहा था कि विश्व की प्रत्येक नारी से मेरा मानसिक सम्पर्क होगा। तो क्या कोई नारी संकट में है?

"ओह। ऐसा विचार करते ही मुझे एक स्त्री संकट में पड़ी साफ-साफ दिखाई पड़ने लगी है –"

कहानी 19 वें पृष्ठ से शुरू

गोल्डन हिट्स सैट नं-3

1 डोगा 35
इंस्पेक्टर चीता, कुत्ता फौज, मुकाबला, बुलडॉग (फोर इन वन)

2 डोगा 36
हड़ताल, डोगा जिंदाबाद, बिच्छू (थ्री इन वन)

3 डोगा 37
आखिरी गोली, डोगा और झबरा, सुपर बॉय (थ्री इन वन)

4 डोगा 38
गोल्डन हत्यारा, कुत्तराज, जबरदस्त (थ्री इन वन)

प्रत्येक का मूल्य 25/-

AVAILABLE IN ENGLISH AND HINDI

प्रत्येक का मूल्य 25/-

थ्री इन वन और फोर इन वन डाइजेस्ट

1	डोगा	27 (थ्री इन वन)	5	डोगा	31 (थ्री इन वन)
	कर्फ्यू, ये है डोगा, मैं हूं डोगा			अदरक चाचा, गैंडा, चोर-सिपाही	
2	परमाणु	28 (थ्री इन वन)	6	परमाणु	32 (फोर इन वन)
	परमाणु, आग, बुलैटप्रूफ			ब्लैक आउट, मक्खी, जौंक, डायमण्ड किलर	
3	भेड़िया	29 (थ्री इन वन)	7	भेड़िया	33 (थ्री इन वन)
	भेड़िया आया, एलफांटो, ग्रीन गोल्ड			भूरा बिल्ला, ब्लास्ट, तेजी	
4	बांकेलाल	30 (थ्री इन वन)	8	बांकेलाल	34 (थ्री इन वन)
	बांकेलाल का कमाल, कर बुरा हो भला, राजकोष के लुटेरे			बांकेलाल और यक्षकुमार, मुकद्दर का धनी, शादी का षड्यंत्र	

प्यारे पाठकों को राज कॉमिक्स की अनुपम भेंट! अब आप अपने पसंदीदा हीरोज की वे कॉमिकें भी पढ़ सकते हैं जो बाजार में खत्म हो चुकी थीं। हमने तीन-तीन व चार-चार कॉमिकों को इकट्ठा करके उन्हें दोबारा सुधारकर नए डायलॉग्स के साथ व कई नए मसालों के साथ नए पॉकेट बुक्स साइज में छापा है। अब वे कॉमिक कलैक्टर (संग्रहकर्ता) अपनी कॉमिक कलैक्शन को पूरा कर सकते हैं जिनके पास ये कॉमिकें नहीं थीं।

कॉमिक मंगवाने का पता :- राजा पॉकेट बुक्स, 330/1 बुराड़ी, दिल्ली-110084.

आप पचास रुपए का अग्रिम मनीआर्डर भेजकर, उपरोक्त कोई भी दो, थ्री-इन-वन डाइजेस्ट मंगा सकते हैं। मनीआर्डर फार्म के निचले हिस्से पर 'डाइजेस्ट' का नाम व नम्बर अवश्य लिखकर भेजें।

नागराज, परमाणु, तिरंगा, भेड़िया, इंस्पेक्टर स्टील व शक्ति के दुश्मनों के ये 22 ट्रेडिंग कार्डस अनुपम सिन्हा, धीरज वर्मा, नरेश व दिलीप चौबे जैसे बड़े आर्टिस्टों ने अत्यंत मेहनत से बनाए हैं व इनके पीछे इन किरदारों के बारे में खूबसूरत तथ्य संजोए हैं विवेक मोहन ने। इन्हें शीघ्र खरीदें। ये ट्रेडिंग कार्ड्स केवल एक बार ही सीमित मात्रा में छपते हैं। यदि आप एक बार चूकेंगे तो फिर दोबारा ये कार्ड्स आपको नहीं मिल सकेंगे। आपको यह कार्ड्स मिलेंगे आकर्षक योजना के साथ 22 कार्ड्स मंगवाने पर तीन कार्ड्स मुफ्त भेजे जाएंगे। यानी 22 कार्ड्स की कीमत पर आप पाएंगे 25 कार्ड्स। 44 कार्ड्स मंगवाने पर 6 ट्रेडिंग कार्ड्स मुफ्त भेजे जाएंगे यानी 44 कार्ड्स की कीमत पर आप पाएंगे 50 कार्ड्स। साथ ही डाक खर्च भी मुफ्त। तो जल्दी से आप हमें 22 कार्ड्स की कीमत 44/- या 44 कार्ड्स की कीमत 88/- मनीआर्डर द्वारा भेज दें। मनीआर्डर फार्म के निचले हिस्से पर अपना नाम, पता साफ-साफ लिखिएगा व साथ ही यह भी लिखिएगा कि आप शक्ति सीरीज के ट्रेडिंग कार्ड्स चाहते हैं। नागराज फैन क्लब के मैम्बर अपना मैम्बरशिप नं. अवश्य लिखें उन्हें स्पेशल गिफ्ट भेजा जाएगा। मनीआर्डर प्राप्त होते ही हम आपको दो सप्ताह में आपके कार्ड्स भेज देंगे। **पता : नागराज नावल्टीज, 330/2, बुराड़ी, दिल्ली-110084**

यह क्या ? मेरा जिस्म प्रकाश में परिवर्तित हो रहा है।
उस प्रकाश में। जिसकी गति ३००,००० किलो मीटर प्रति सैकिंड है –
झिप
इधर अपराध के भूखे कुत्ते मासूमियत की कोमल चमड़ी को उधेड़ डालने के लिये बिल्कुल तैयार थे –
हम भूखे कुत्ते हैं। हमें भूख लगे तो हम इंसान का मांस नोंच लेते हैं...
तेरे पति के तो हाथ काट कर स्लीव पर टांग दिया है हमने।
तेरी जुबान भी काट डालेंगे।
उस हत्यारे का चाकू उसकी जुबान काट पाता, इससे पहले ही एक बिजली सी चमकी –
झंझनाक
आह!
ओफ्फ!
एक रक्षक वह भी था..

जुल्म चाहे स्त्री पर हो या पुरुष पर। रात के के उस रक्षक का काम तो जुर्म मिटाना था-
तुम्हारी भूख मिटाने आ गया है शेगा!
झड़
ताड़
तुम्हें भूख लगे तो इंसानों का मांस नोच लेते हो न?
मुझे भूख लगती है तो मैं भी यही करता हूं।
ग्रोंऽऽऽ
फर्क सिर्फ इतना है कि तुम मासूमियत का चेहरा नोचते हो...
...और मैं हैवानियत का!
टन टनाटन
चूम चूम
ये कमीने व घटिया लोग पीठ पर वार भी कर सकते हैं। यह बात मैं भी जानता हूं। ऐसे कायर दुश्मनों का पता मैं देख कर नहीं, सूंघ कर लगाता हूं।

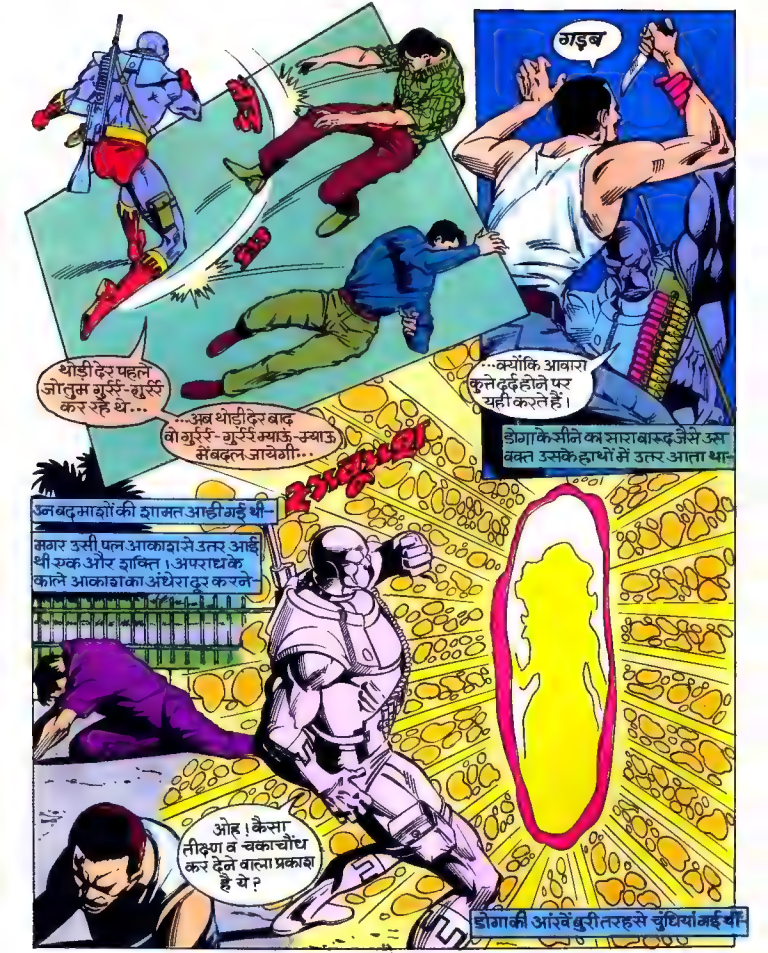
गड़ब
थोड़ी देर पहले जो तुम गुर्र्र-गुर्र्र कर रहे थे...
...अब थोड़ी देर बाद वो गुर्र्र-गुर्र्र म्याऊं-म्याऊं में बदल जायेगी...
...क्योंकि आवारा कुत्ते दुर्दशा होने पर यही करते हैं।
डोगा के सीने का शरारा बाहर जैसे उस वक्त उसके हाथों में उतर आता था-
ज़ब्बूऽऽऽ
उन बदमाशों की शामत आ ही गई थी-
मगर उसी पल आकाश से उतर आई थी एक और शक्ति। अपराध के काले आकाश का अंधेरा दूर करने-
ओह! कैसा तीक्ष्ण व चकाचौंध कर देने वाला प्रकाश है ये?
डोगा की आंखें बुरी तरह से चुंधिया गई थीं-

आंखों से चुंधियाहट गायब हुई तो चुंधियाहट से सिकुड़ी उसकी आंखें अब आश्चर्य के साथ फैल गई-
कौन है ये अद्भुत औरत ? अचानक यहां कहां से प्रकट हो गई ?
इतना तेज प्रकाश इसने कैसे पैदा किया ?

उसके चेहरे के चप्पे-चप्पे पर डोगा को सिर्फ एक ही चीज नजर आई-
आक्रोश ! आक्रोश ! एक ऐसा जबरदस्त आक्रोश-
जो उसके भी समूचे जिस्म में तब दौड़ जाया करता था जबवो किसी निर्दोष को अत्याचार व पाप की चक्की में पिसते देखता था-
कौन हो तुम ? हम्फ !
शक्ति !...

...और एक-एक बार उस ईश्वरीय शक्ति से ओत-प्रोत, जिसके बाद कैसी भी दरिन्दगी के होश फाख्ता होने लगते थे-

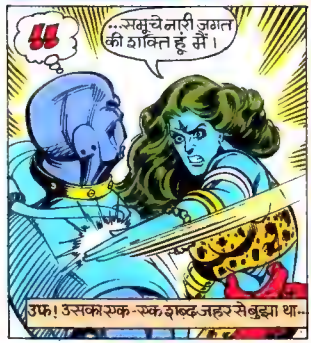
...समूचे नारी जगत की शक्ति हूं मैं।
उफ ! उसका एक-एक शब्द जहर से बुझा था-

डोगा जैसी मजबूती की दीवार भी पीसा की मीनार की तरह झुकने पर विवश हो गई-
इसकेवारों ने मेरे हाथों को बेजान कर दिया है और टांगों को निष्प्राण।
...और ये सब हो गया था केवल कुछ ही पलों में -
नारी की रक्षा व नारी पर जुल्म का अधिकार सदियों से पुरुष के हाथों में रहा है। अब उनहाथों को आराम की जरूरत है।...
इनकी भूख का इंतजाम मैं करूंगी।
आह
...क्योंकि दरिन्दगी के भूखे इन कुत्तों को निवाला मैं दूंगी।
उफ! ऐसा साहस! ऐसा कमाल! तेजी के साथ अपने पर झपटे उस गंडासे को इस प्रकार थामलेना तो सरासर अपने उस हाथ को मौत की दावत देना था -

क्षण भर से भी कम समय में डोगा की आंखों ने देखा वह रुका और चमत्कार-

अरे! इसकी मुट्ठी में थमे गंडासे का सारा लोहा मोम की तरह कैसे पिघल गया?

समस्त दुखिया नारी जाति की 'आहों' की प्रचण्ड ऊष्मा ने इसे पिघलाकर ये नया रूप दे दिया है।

दुश्मनों के छक्के छुड़ाने के लिये-

आह!

उफ!

ये तुम्हारे ही कर्तव्य के औजार का लोहा है...

...जो अब तुम्हारे जिस्मों को लहूलुहान कर रहा है।

डोगा की मार से थरथराए 'गुण्डे' शक्ति के प्रहार से तो कांप ही उठे-

कील ss

कील ss

कील ss

भागो!

इतनी भी जल्दी क्या है ? अभी तो आकाश पर चांद निकला है, तरसे तो तुमने देखे ही नहीं...
...जो कि तुम्हें तबनजर आयेंगे जब मैं ये कीलें तुम्हारी जीभ में ठोंक दूंगी।
आह!
उफ़!
नारी पर किये जुल्म की सजा दे दूंगी।
आह
डोगा अपनी इच्छाशक्ति से जूझता उठकर खड़ा होने की चेष्टा कर रहा था। मगर उसकी वह कोशिश सफल नहीं हो पा रही थी —
तब। दर्द ने उसका दामन थाम लिया और वो बेहोश हो गया—
...मगर मुझे जानना तो होगा ही कि ये कौन है ? क्या है ? कहां से आई है ?
वह अपनी बाजुओं को हिला पाने में असफल था कि जाकर थामले शक्ति की कलाई और पूछे उससे कि बता कौन है तू?
आप देवी बनकर आई हैं मेरी मदद को।

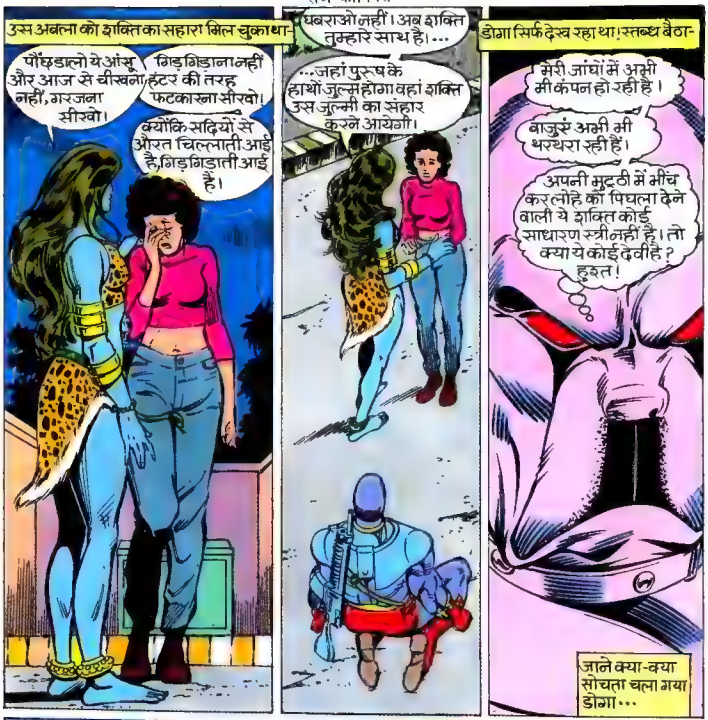
उस अबला को शक्ति का सहारा मिल चुका था-
पोंछ डालो ये आंसू और आज से चीखना, चिल्लाना नहीं, गरजना सीखो।
चिड़चिड़ाना नहीं, हंटर की तरह फटकारना सीखो।
क्योंकि सदियों से औरत चिल्लाती आई है, गिड़गिड़ाती आई है।
घबराओ नहीं। अब शक्ति तुम्हारे साथ है।...
...जहां पुरुष के हाथों जुल्म सहोगी वहां शक्ति उस जुल्मी का संहार करने आयेगी।
डोगा सिर्फ देख रहा था! स्तब्ध बैठा-
मेरी जांघों में अभी भी कंपन हो रही है।
बाजुएं अभी भी थरथरा रही हैं।
अपनी मुट्ठी में भींच कर लोहे को पिघला देने वाली ये शक्ति कोई साधारण स्त्री नहीं है। तो क्या ये कोई देवी है? हुस्त!
जाने क्या-क्या सोचता चला गया डोगा...
...जबकि इधर-
बताओ मुझे कि वो बदमाश तुम्हारी जीभ क्यों काट फेंकना चाहते थे?
मेरा नाम सोनाली है...। ये द्वारका के आदमी थे जो मेरे पीछे लगे थे।
सोनाली की आंखें शून्य को घूरते हुए...अतीत में डूब रही थीं -

"धारा! अंडरवर्ल्ड का एक कुख्यात अपराधी"
"हफ्ता वसूलना –"
"सुपारी लेकर नामी-गिरामी हस्तियों की हत्याएँ कराना –"
"स्मगलिंग करना –"

"और बड़े-बड़े उद्योगपतियों से 'प्रोटेक्शन मनी' के नाम पर करोड़ों रुपयों की वसूली करना उसके 'धंधे' हैं—"
"मेरे पति के पांव भी अपराध की इन गंदी गलियों में धंसे हुए थे..."

"उस शाम जब मैंने उन्हें वह खुशखबरी दी—"
आप...आप बनने वाले हैं।
क्या सच? ओह, सोनाली!
ये तो तुमने बहुत अच्छी खबर दी है।

हम कल शाम इस खुशी को सेलिब्रेट करेंगे।
नहीं जगजीत! हम इस खुशी को कभी सेलिब्रेट नहीं करेंगे।

ये तुम क्या कह रही हो सोनाली?

ठीक कह रही हूं। मैं नहीं चाहती कि हमारी तकदीर ने हमारे माथे पर जुर्म की जो लकीरें बना दी हैं, उनकी छाप हमारे बेटे पर भी पड़े।...
...इसलिये मैंने फैसला किया है कि मैं इस बच्चे को जन्म नहीं दूंगी।
नहीं। तुम ऐसा नहीं कर सकतीं। मैं अपने पाप व जुर्म की सजा अपने बेटे को हर्गिज़ नहीं देने दूंगा।
... मेरी तकदीर ने मेरे माथे पर जुर्म की जो लकीरें बना दी हैं, उनकी छाप मैं अपने बेटे पर हर्गिज़ नहीं पड़ने दूंगा।
आह...
अरे! कौन हो तुम लोग?
"उनके एक ही प्रहार से जगजीत का मस्तिष्क चकरा गया।"
और वह मान भी गया है...
मेरा यकीन करो कि मैं इस काम से नफरत करता हूं। मैं यह काम छोड़ने के लिये दारा से कह चुका हूं।

"उनके खतरनाक इरादे देखकर मैं उन पर झपट पड़ी। लेकिन--"
तुझे भी समझेंगे। पहले तेरे आदमी को समझ लें।
"चकरा गया मेरा भी मस्तिष्क"
आग
"उन्हीं चकराई आंखों से मैंने देखा वो हाहाकारी दृश्य--"
अपराध की दलदल से अपराधी को सिर्फ मौत निकाल सकती है।
इसकी बीवी की जुबान भी काट दो।
हाहाहा। दारा के खिलाफ उठी हर आवाज को ऐसे ही ठोंक दिया जायेगा।

"मैं मदद के लिये चीखती हुई बाहर भागी। मगर आज का इंसान देश की बिगड़ चुकी कानून व्यवस्था, हालात व अपराधियों से इतना खौफजदा है कि वो चाहकर भी किसी की मदद नहीं कर पाता-"
बचाओ

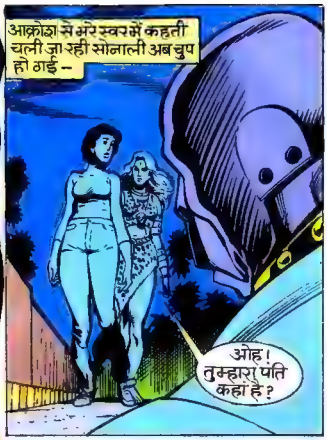
आक्रोश से भरे स्वर में कहती चली जा रही सोनाली अब चुप हो गई --
ओह! तुम्हारा पति कहां है?

वो रहे।
शक्ति के साथ सोनाली तेजी के साथ उसके पति को आजाद कराने के लिए अंदर की ओर बढ़ गई।

तब शक्ति वापस डोगा के निकट पहुंची-
ओह! कैसी शक्ति है ये? मेरे लचर पचर से हाथ गस दोनों बाजुओं में शक्ति एकदम कैसे लौट आई है?

शक्ति शायद वापस जाने के लिये मुड़ने वाली थी। लेकिन डोगा की सशक्त आवाज ने उसके कदमों को ठिठका दिया –
कौन हो तुम? ये जाने बिना डोगा तुम्हें यहां से नहीं जाने देगा।
विचित्र ढंग से तब न सिर्फ मुस्करा दी थी शक्ति, बल्कि –
मैं सिर्फ नारी पर हुए जुल्मों का जवाब देती हूं। पुरुषों के अनावश्यक सवालों का नहीं।
पिघल गया गन का सारा लोहा। स्तब्ध खड़ा रह गया डोगा –
अब इस ढंग से तुम मुझ पर गोली चलाने का अपना अरमान पूरा कर सकते हो डोगा। गुडबॉय डोगा!
डोगा के मुंह से बोल तक न फूटा था। शक्ति की अद्भुत शक्तियों ने जैसे उसकी बुद्धि को कुंद ही कर दिया था –

जबकि इधर पाप की लंका का वह रावण बौखला उठा था–

जगजीत और उसकी पत्नी का जिन्दा बच जाना हमारी और संगठन की मौत है।

कीला! उन दोनों को आज रात ही हॉस्पीटल में जाकर खत्म कर दो।

कीला और उसके साथी हॉस्पीटल में मौत देने के अभियान पर निकल पड़े थे–

AMBULANCE

नारी जाति की रक्षा के अभियान पर एक अन्जान शहर में खड़ी थी चंदा–

तो मैं मुम्बई आ पहुंची हूं।

मुम्बई आपका अपना शहर है, इसे स्वच्छ रखें।

यानी अपने शहर, हिम्मत नगर, दिल्ली से 1408 किलो मीटर दूर मुम्बई में।

यहां से मैं चाहूं तो शक्ति बनकर फौरन वापस जा सकती हूं।

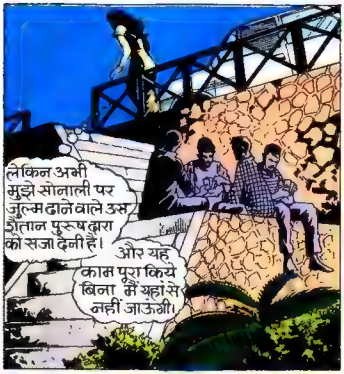
लेकिन अभी मुझे सोनाली पर जुल्म ढानेवाले उस शैतान पुरुष वाग को सजा देनी है।
और यह काम पूरा किये बिना मैं यहां से नहीं जाऊंगी।

मुम्बई की सुनसान व अंधेरी सड़कों पर छिपे शैतानों की नजर उस पर पड़ गई थी-
बट्टू। गट्टू। फ्लाई ओवर के नीचे चलो इसे। वहीं इसके जेवर उतार लेंगे।
इसे दबोच ली गई थी चंदा जैसे शेरों के झुंड ने कोई हिरणी दबोच ली हो —

वह छटपटाई। कसमसाई। मचली-
मगर उसकी मासूम कलाइयां। गोरे हाथ। नाजुक जिस्म चार पहाड़ से मजबूत दरिन्दों का सामना भला कर भी कैसे पाते -
उफ। कुदरत ने नारी को इतना कोमल क्यों बनाया था?
चाकू निकाल कर उसकी गर्दन पर रख दे गट्टू!

शक्ति का वह रूप कितना बेबस था। कितना कमजोर। लाचार। बेबस -
चल उतार ये मंगल-सूत्र।
उतार ये बुंदे।

शक्ति भी तो उसवक्त लाचार थी-
क्या इन गुंडों से मैं अपनी रक्षा खुद नहीं कर सकती?
मैं तो शक्ति हूं। पलभर में इन्हें सबक सिखा सकती हूं।
मगर इनके सामने मैं शक्ति कैसे बन सकती हूं।

प्रलय शक्ति जिसकी रग-रग में मौत थी वो चंदा आज पनाह मांग रही थी-
तो क्या ये गुण्डे आज मनमानी कर जायेंगे?

रात के रक्षक के मौजूद रहते कोई भला मनमानी कर भी कैसे सकता है -
आऽऽह
धड़
धड़

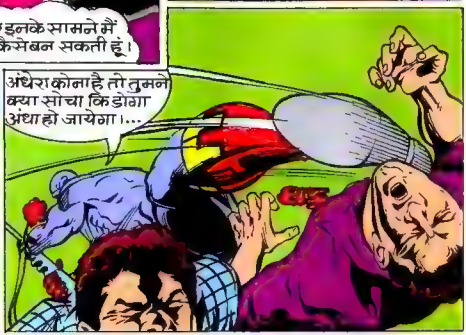
अंधेरा कोना है तो तुमने क्या सोचा कि डोगा अंधा हो जायेगा।...

...डोगा की आंखें अमावस की रात में भी उन कीनों को अच्छी तरह से देख लेती हैं।
...जहां कोई अपराध करवट लेता है।
धड़

लो। मेरी मार से तो नहीं, मगर मेरा नाम सुनकर चारों के होश एकसाथ गेटवे ऑफ इण्डिया की सैर को चले गए।

और तुम! येक्या हुलिया बना रखा है तुमने?
किसी हॉस्पीटल से भागी हो क्या?
इलाज का बिल चुकाकर आई हो या नहीं? कोई पंगा तो नहीं किया? ये लो अपने जेवर।

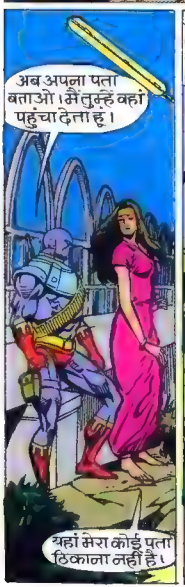
अब अपना पता बताओ। मैं तुम्हें वहां पहुंचा देता हूं।
यहां मेरा कोई पता ठिकाना नहीं है।

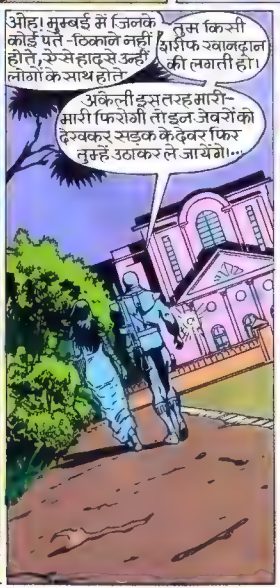
ओह! मुम्बई में जिनके कोई पते-ठिकाने नहीं होते, ऐसे हादसे उन्हीं लोगों के साथ होते-
तुम किसी शॉफ्ट ज्वानदान की लगती हो।
अकेली इस तरह मारी-मारी फिरोगी तो इन जेवरों को देखकर सड़क के देवर फिर तुम्हें उठाकर ले जायेंगे...

...जाओ। उस घर में चली जाओ। वो चीता का घर है। उसकी बहन मोनिका के साथ तुम जब तक चाहो, रह सकती हो।

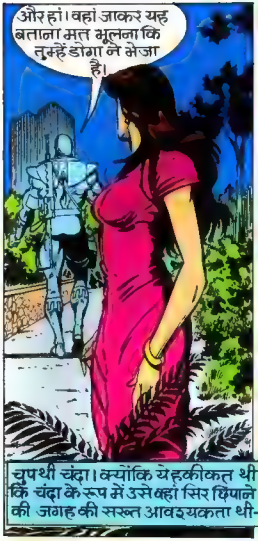
और हां। वहां जाकर यह बताना मत भूलना कि तुम्हें डोगा ने भेजा है।
चुप थी चंदा। क्योंकि ये हकीकत थी कि चंदा के रूप में उसे कहां सिर छिपाने की जगह की सख्त आवश्यकता थी-

इधर कीला को जगजीत कुमार की जान की आवश्यकता थी-
ओफ्फ!
तुम? तुम अंदर कैसे आए?
डॉक्टर और यमराज कभी भी कहीं भी आ-जा सकते हैं जगजीत कुमार!...

...और फिलहाल कीला तुम्हारे लिये डॉक्टर का रूप धर कर आया हुआ यमराज है!...

...जो अब तुम्हारी जान लेकर ही जायेगा। हाहाहा!
नहीं! तुम ऐसा नहीं कर सकते।

मैं ऐसा ही करूंगा। और अगर मैं ऐसा नहीं किया तो मुझे पता है कि कानून तेरे हाथों का फंदा बना-कर हमारा दम निकाल देगा।
रुक जा कीला!

ये इंजेक्शन तुम्हारे अंदर मौजूद अपराध के कीटाणुओं को तुम्हारी मौत के साथ ही खत्म कर देगा।
खत्म
आहऽऽ
हुम्फ!
---क्योंकि तेरा इस कानून नहीं, डोगा निकालेगा।
कीला और मेरी लड़ाई के बीच में तुममें से कोई भी नहीं आना चाहिये।
धड़ाक
चेहरे पर जैसे पूरे अपराध जगत की दरिन्दगी लिये कीला डोगा पर झपटा-
हीऽऽऽयाऽऽ
खटाक

जंगली, वहशी, दरिन्दा जानवर नजर आ रहा था कीत्ला –
डोगा ! कीत्ला जब कीत्ला नामक ये शस्त्र फ्रन कर निकलता है तो अपने दुश्मन को कील कर ही लौटता है।
जब मैं यहां से जाऊंगा तो तेरा शरीर खून के कितने फौव्वारे छोड़ रहा होगा, यहतो मुझे भी नहीं मालूम।
खच्च
डोगा जबड़े भींचे सह रहा था उस पीड़ा को –
डोगा की वह हालत देखकर तड़प गई थी सोनाली –
ऊं ऊंऊं
सहम गया था जगजीत कुमार –
??
भेड़िये सी गुर्राहट मुंह से निकालते हुए कीत्ला ने इस बार प्रहार किया पंजे का –
खच्च
मगर विवश था उठ पाने से भी –
यह सब वार वो किसी मशीन की तरह ही जल्दी -जल्दी करता चला गया था –

अगर अब और नहीं ! डोगा ने अपने हाथों के भीषण प्रहार से अपनी कमर में घुसे किला के हाथों को अलग किया-
खुंखार हो उठा डोगा-
तूने अपनी कीलों की ताकत दिखा दी कीला!
अब मैं तुझे दिखाऊंगा तेरी ही दरिन्दगी की सूरत !...
...क्योंकि जितनी दरिन्दगी मैं देखता हूं! महसूस करता हूं! उससे भी कई गुणा ज्यादा दरिन्दगी में दरिन्दगी दिखाने वाले को वापस लौटाता हूं।
आऽऽऽ
आज तक तेरी दरिन्दगी का शिकार हुए लोगों के लिये आज दीवाली होगी कीला! क्योंकि तेरा भयानक अंजाम उन्हें एक अनोखी खुशी देगा।
आऽऽऽ
तड़प उठा था कीला-

मगर डोगा उसे उसकी एक भी सांस चलते रहने तक तड़पाना चाहता था-
अरे। क्या हुआ कीला? अभी तो तेरे होंठ ठहाके उगल रहे थे।
ये अचानक चीखें क्यों उबलने लगे?
हंस। अब हंस कीला!
कायर की मौत मरेगा क्या?
हंस कीला, हंस!
उसके बाद फिर डोगा के हाथ न रुके...
...और जब रुके तो कीला के पूरे बदन पर उसके रोम छिद्रों से भी ज्यादा कीलों के छिद्र थे-
डोगा ने 'कीलों' वाले शस्त्र को कीला की लाश पर फेंका-
और फिर सोनाली को आजाद किया-
तुमने एक बार फिर हमें बचा लिया डोगा!

और तब–
डोगा, मैं जानता था कि तुम जरूर जाओगे। मेरी आखें हर पल तुम्हारा ही इंतजार कर रही थीं। मुझे सोनाली ने सब कुछ बता दिया था कि किस प्रकार तुमने और उस साक्षात शक्ति ने सोनाली की मदद की।
हां। मुझे आना ही था जगजीत क्योंकि।
दारा को खत्म करने के लिये मुझे तुम्हारी मदद की जरूरत है।
जबड़े कस गए थे जगजीत के
डोगा! वो दरिन्दे समझते हैं कि मेरे हाथ काट कर अपनी तबाही के तूफान को उन्होंने रोक लिया है।
मगर नहीं। ये तूफान तो मेरे सीने में है जो हाथ कट जाने से नहीं रुक सकता।
और तभी दरवाजा बाहर से बुरी तरह से खट-खटाया जाने लगा–
पुलिस।
दरवाजा खोलो।
जगजीत के कहने पर सोनाली ने डोगा को वह तस्वीर लाकर दी–
डोगा। ये अब्दुल्ला है। इसका काम है विदेशों से आए स्क्रैप में से हथियारों की छंटाई करना...
तब जगजीत अब्दुल्ला और दारा के बारे में उसे सब कुछ बताता चला गया–
लगता है अंदर की धमा चौकड़ी के बाद किसी ने पुलिस बुला ली है।
सोनाली! दरवाजा खोलो।
अब मैं चलता हूं।

★ स्क्रैप : लोहे का कबाड़

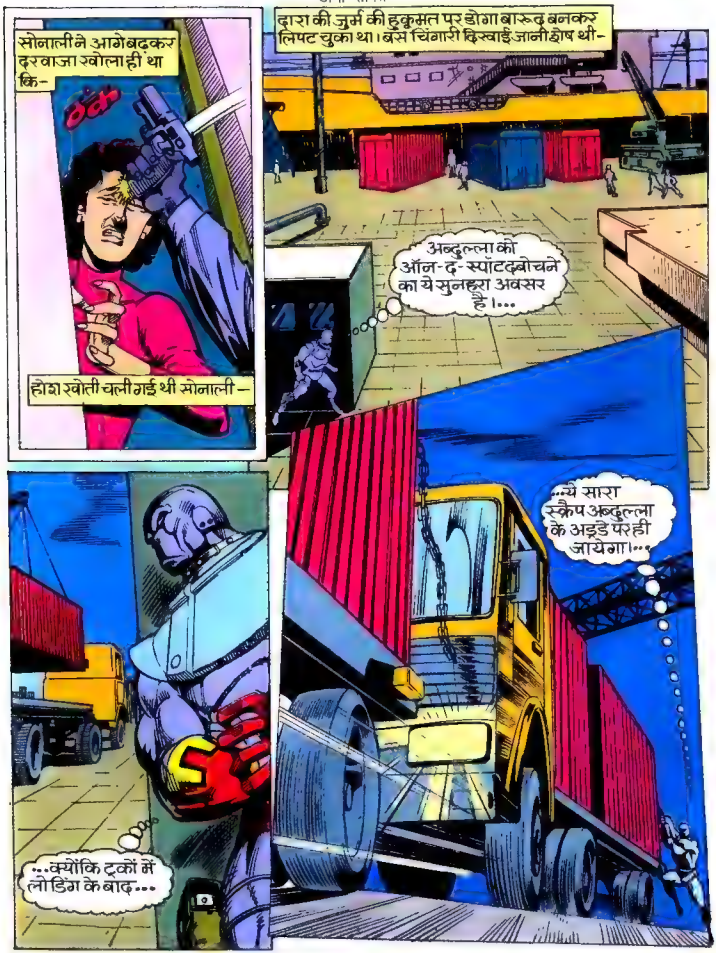
सोनाली ने आगे बढ़कर दरवाजा खोला ही था कि-
धक्
होश खोती चली गई थी सोनाली –
दारा की जुर्म की हुकूमत पर डोगा बारूद बनकर लिपट चुका था। बस चिंगारी दिखाई जानी शेष थी-
अब्दुल्ला को ऑन-द-स्पॉट दबोचने का ये सुनहरा अवसर है।...
...ये सारा स्क्रैप अब्दुल्ला के अड्डे पर ही जायेगा।...
...क्योंकि ट्रकों में लोडिंग के बाद...

"जहां इस स्क्रैप की छंटाई अब्दुल्ला की देखरेख में उसके छंटे हुए गुंडे करेंगे"
इस बार देखना है कि स्क्रैप में कितना माल हाथ लगता है।
उन्हें यह मालूम होता है कि किस स्क्रैप को अलग करना है।

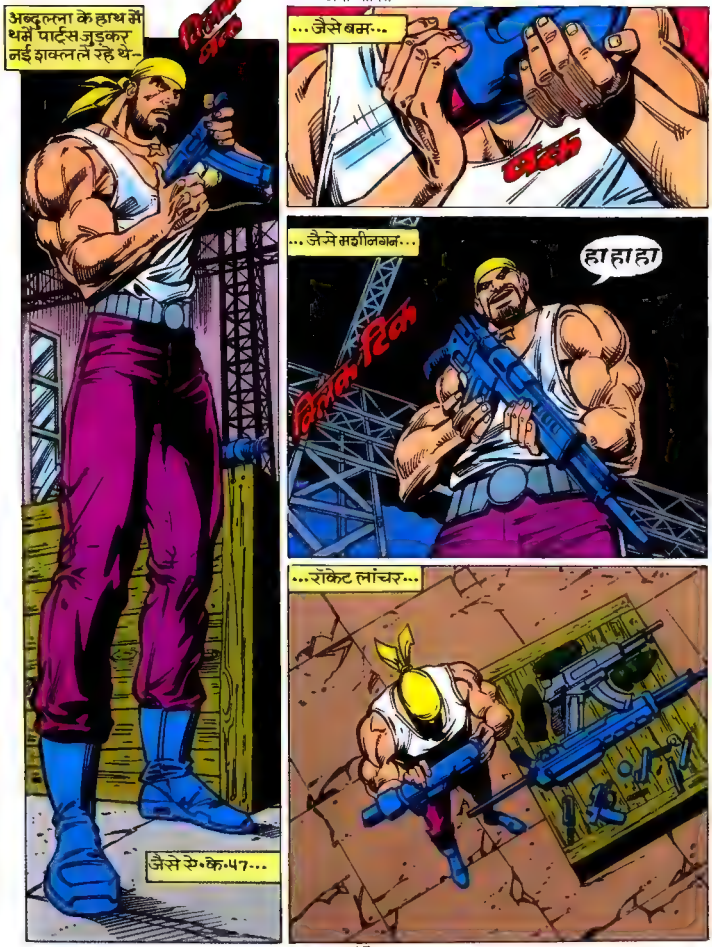
अब्दुल्ला के हाथ में थमें पार्ट्स जुड़कर नई शक्ल ले रहे थे-
...जैसे बम...
...जैसे मशीनगन...
हा हा हा
...रॉकेट लांचर...
जैसे ए॰के॰47...

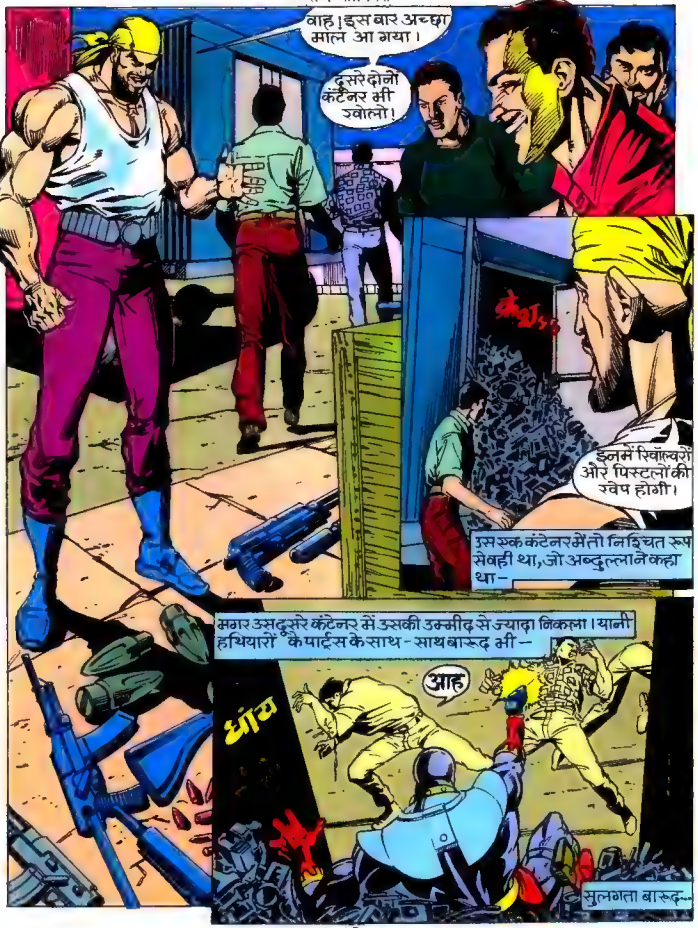
वाह! इस बार अच्छा माल आ गया।
दूसरे दोनों कंटेनर भी खोलो!
धड़ाम
इनमें रिवाल्वरों और पिस्टलों की खेप होगी।
उस रूक कंटेनर में तो निश्चित रूप से वही था, जो अब्दुल्ला ने कहा था—
मगर उस दूसरे कंटेनर में उसकी उम्मीद से ज्यादा निकला। यानी हथियारों के पार्ट्स के साथ-साथ बारूद भी—
धांय
आह
सुलगता बारूद—

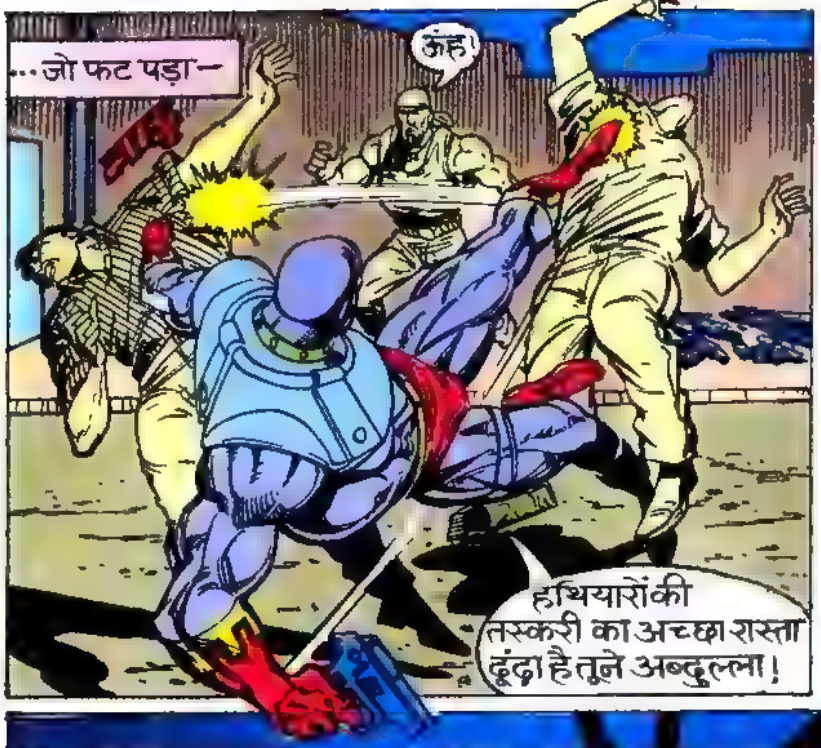
...जो फट पड़ा—
ऊंह!
हथियारों की तस्करी का अच्छा रास्ता ढूंढा है तूने अब्दुल्ला!

इन्हीं हथियारों से दारा के इशारे पर तुम बड़े-बड़े जुर्म करते हो।
मगर अब तुम्हारा खेल खत्म हो गया अब्दुल्ला!
तुम्हारे बाद अब मैं दारा को खत्म करूंगा।

वो अब्दुल्ला, जो कंटेनर की लोहे की दीवार पर घूंसा मार दे तो उसमें भी छेद कर दे। वो अब्दुल्ला डोगा की बात सुनकर खतरनाक ढंग से मुस्कराया—
मुझे जरूर खत्म करना!
मगर पहले अपने चारों ओर नजर उठा कर देख ले डोगा, क्योंकि तुम्हारी मौत तुम्हारे सिर पर नाच रही है।

अगर तुमने मुझे खत्म किया तो बचोगे तुम भी नहीं। क्योंकि तुम्हारे रिवॉल्वर में बची गोलियां एक साथ मेरे उन आठों आदमियों को खत्म नहीं कर पायेंगी। क्योंकि उससे पहले ही वो तुम्हें भून डालेंगे।

डोगा हंसा-
निश्चित रूप से उसके होंठों पर रक्तवीभत्स हंसी थी-
अब्दुल्ला! ये तो आने वाले क्षण बता देंगे कि कौन किसको भूनेगा।
फिलहाल! तुम उस कंटेनर की तरफ चलो।
तुम्हारी और मेरी जिन्दगी और मौत का फैसला अब ये कंटेनर ही करेंगे।
नाऊ मूव!
फिर अब्दुल्ला सहित डोगा उस कंटेनर में समा गया-
चलो अंदर।
कंटेनर का दरवाजा डोगा ने ही बंद किया-
'अब्दुल्ला! अब शुरू होगी तेरे और मेरे बीच में मौत की जंग।'
धड़ाम
डोगा के आदेश पर कंटेनर का दरवाजा अब्दुल्ला ने ही खोला-

थोड़ी देर में सब जान जायेंगे कि इस जंग में कौन जीता कौन हारा।
मगर डोगा के लिये मौत की बिसात बाहर भी बिछ चुकी थी—
आठों गाईस सुरक्षा मचानों से उतर कर वहां जमा हो गए थे —
निश्चित रूप से उनकी गनों का निशाना उसी कंटेनर की तरफ था-
जिसके अंदर जारी थी डोगा और अब्दुल्ला के बीच जिन्दगी और मौत के लिये जंग—
उस जंग को जीत कर पता नहीं कौन बाहर निकलने वाला था-
अब्दुल्ला बाहर निकलता तो भी डोगा की मौत थी। डोगा बाहर निकलता तो भी —
कंटेनर में चली गोली की उस आवाज के साथ ही गाईस की उंगलियां किसी भी क्षण गनों के ट्रेगर को खींचने के लिये तैयार हो गईं—

और उस वक्त तो सबकी पकड़ अपनी गनों पर सख्त हो गई, जब कंटेनर के दरवाजे पर आहट हुई —

यानी कंटेनर का दरवाजा खुलने वाला था—

कौन आयेगा बाहर-

गाईस को गोलियां चलानी पड़ेंगी या नहीं-

धड़ाम

कंटेनर से चकराया हुआ साडोगा बाहर आया—

हुक्फ!

ठीक उसी पल बाहर खड़े गाईस की गनों के ट्रिगर दबे तो फिर तब तक दबे ही रह गए...

आह!

...जब तक डोगा खून से नहा कर लाश में बदल कर नीचे न गिर पड़ा—

उफ्! डोगा की मौत तो बाहर भी साँप की तरह कुण्डली मारे बैठी थी —

और गनों की 'मैगजीनें' खाली न हो गईं-

खत्म हो गई डोगा की कहानी।

लेकिन उन आठ गोलियों ने कहानी दोबारा शुरू कर दी-
धांय धांय
धांय धांय
धांय धांय

कंटेनर में से उदय हुआ सूरज—
डोगा की कहानी इतनी जल्दी खत्म नहीं हो सकती।

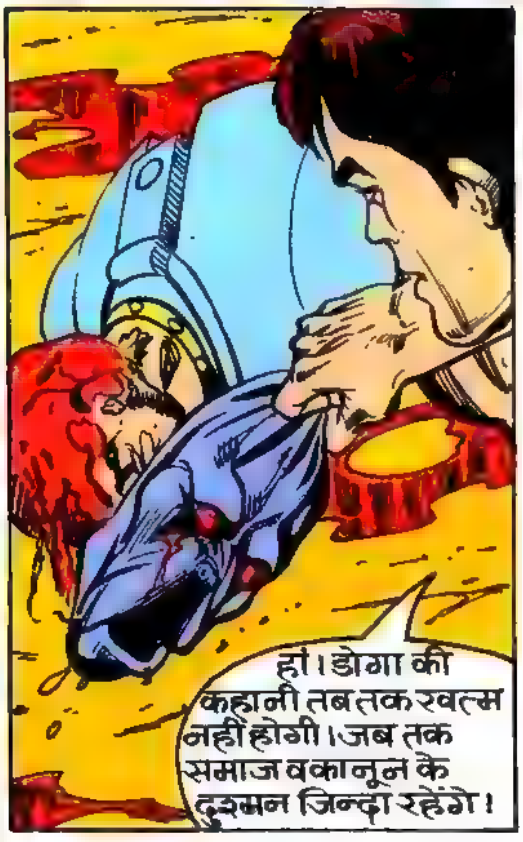
हां। डोगा की कहानी तब तक खत्म नहीं होगी। जब तक समाज व कानून के दुश्मन जिन्दा रहेंगे।

"मैं जानता था कि अगर मैं कंटेनर में से बाहर निकला तो ये सब मुझे देखते ही मुझ पर गोलियां बरसा देंगे। इसलिए मैंने अपनी पूरी कास्ट्यूम और मास्क अहमुच्चिन्त हो चुके अब्दुल्ला को पहना कर...

"...उसे बाहर धकेल दिया था"

मस्कुलर मैन दारा -

कीत्ता के बाद अब्दुल्ला को भी डोगा ने खत्म कर दिया। मेरे उन सभी आदमियों की मौत का जिम्मेदार तू है जगजीत !

दारा की एक-एक नस में कोई तूफान हिलोरें लेने लगा था-

सीने में चलने लगी थी शोलों की आंधी-

धम्प धम्प धम्प

जबड़े एक दूसरे को बुरी तरह से कुचल डालने को बेताब थे उसके -

तुम्हारे जिस्म की धज्जियां मैं अपने हाथों से उड़ाऊंगा।

नहीं ! उन्हें छोड़ दे कमीने !

धड़ाम

तुम दोनों को छोड़ दूंगा। मगर मरने के बाद।
तुम्हारे जिस्मों को मैं समुद्र की मछलियों को भेंट में दूंगा।
उसी पल उस खामोश रात के सीने पर दस्तक देते उस शिप की ओर बढ़ रहे थे डोगा के कदम—
तेरी तबाही अब दूर नहीं हैदारा। तेरी जल-समाधि बनाने आ रहा है डोगा।
दारा पर विक्षिप्तता सी छाती चली जा रही थी—
जगजीत! हम अपराध के समुन्द्र की मछलियां हैं।
जिन्दा भी इसी में रहती है और मरती भी इसी में हैं।
तूने कैसे सोच लिया था कि इस समुद्र से निकल कर तू बच जायेगा। तुम दोनों को यही समझाने के लिये मैं यहां उठवा कर लाया हूं।
अब तेरी आंखों के सामने पहले तेरी पत्नी का कदम निकलेगा। हाहाहा!
आह!
रूक भयानक दिल फाड़ चीख निकली थी उसके मुंह से---
जो कि फिजाओं में गूंजती चली गई—
आहऽ

चीता की बहन मोनिका के साथ कॉफी सिप करती चंदा का जेहन उस चीख के साथ ही चर्रा उठा था। और उसकी यह हालत देख कर चौंक पड़ी थी मोनिका भी –

क्या हुआ चंदा?

टक

अ...क...कुछ नहीं!

मगर उसके जेहन में बिजली की तरह कौंध गए थे घायल होती सोनाली के चित्र –

उसकी हर चीख चंदा के जेहन को जैसे बिजली का झटका दे रही थी–

जिसका सीधा सा अर्थ ये था के अब उसे शक्ति बनना है –

मगर कैसे–

मोनिका के सामने से वह शक्ति बनकर गायब कैसे हो सकती थी?

अरे! तुम्हें कुछ हो रहा है। तुम्हारी तबियत तो ठीक है–

हिक

थर्रा उठा चंदा का जिस्म –

ओह, गॉड इसे तो कोई दौरा पड़ रहा है।

मजलूम स्त्री की चीखें उसे बेचैन जो कर रही थीं–

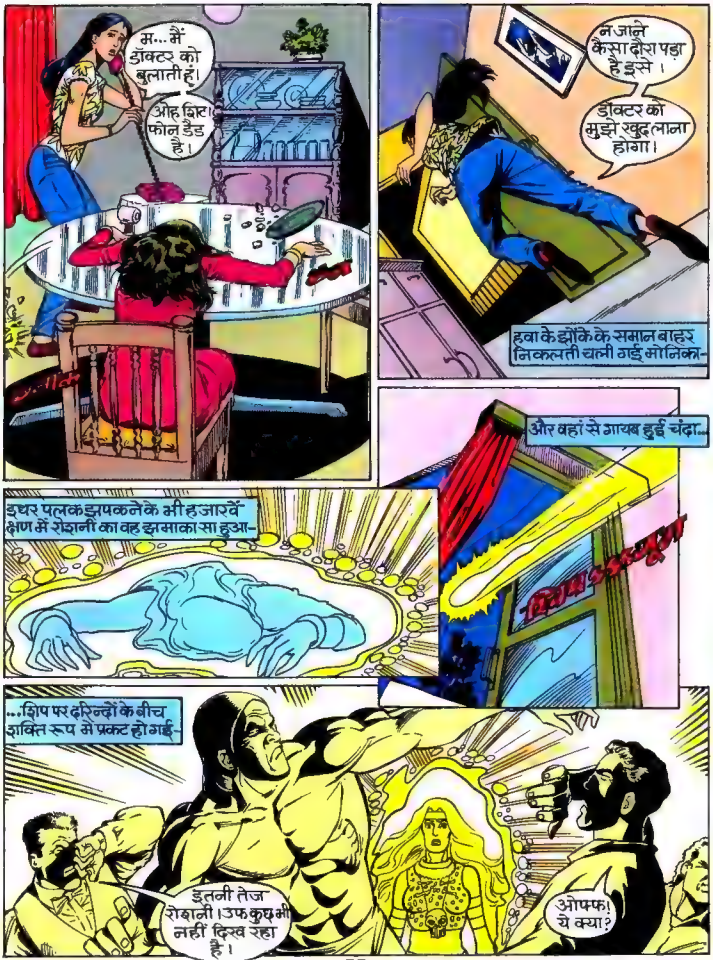
म...मैं डॉक्टर को बुलाती हूं।
ओह शिट! फोन डैड है।
न जाने कैसा दौरा पड़ा है इसे।
डॉक्टर को मुझे खुद लाना होगा।
हवा के झोंके के समान बाहर निकलती चली गई मोनिका-
और वहां से गायब हुई चंद्रा-
इधर पलक झपकने के भी हजारवें क्षण में रोशनी का वह झमाका सा हुआ-
...शिप पर दरिन्दों के बीच शक्ति रूप में प्रकट हो गई-
इतनी तेज रोशनी। उफ कुछ भी नहीं दिख रहा है।
ओफ्फ! ये क्या?

दिखेगा। अभी सब कुछ दिखेगा।
शक्ति के रूप में मैं दिखूंगी।
सोनाली के रूप में नारी पर हुआ जुल्म तुझे दिखेगा।
गड़ब!
शक्ति के उस हाथ की ऊष्मा ने जला डाला दाश का वह गाल-

मौत के अंधेरों में खो गई जिन्दगी की चमकती चोट आई
अरे। ये तो वही शक्ति है।

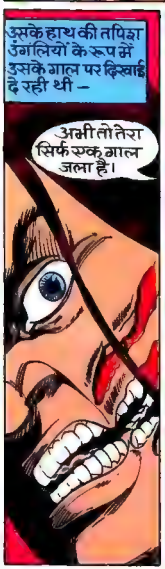
उसके हाथ की तपिश उंगलियों के रूप में उसके गाल पर दिखाई दे रही थी –
अभी तो तेरा सिर्फ एक गाल जला है।

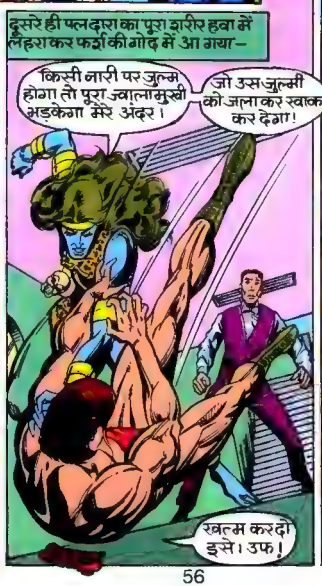
दूसरे ही पल दाश का पूरा शरीर हवा में लहरा कर फर्श की गोद में आ गया –
किसी नारी पर जुल्म होगा तो पूरा ज्वालामुखी भड़केगा मेरे अंदर।
जो उस जुल्मी को जला कर खाक कर देगा!
खत्म कर दो इसे। उफ!

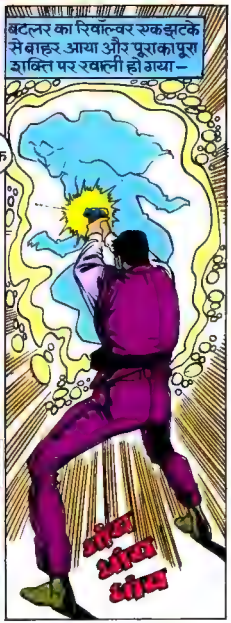
बटलर का रिवॉल्वर एक झटके से बाहर आया और पूरा का पूरा शक्ति पर खाली हो गया –
धांय धांय धांय

SHSss
दारा दंग रह गया शक्ति की वह खौफनाक शक्ति देखकर –
तेरे लिये इतनी सजा ही काफी है।
नहींऽऽ
शक्ति की खनकदार हंसी में क्रूरता आ गई थी –
इधर से आगे बढ़े दारा के बाकी गुण्डे और इधर शक्ति के हाथ से सनसनाया वो त्रिशूल–
आह!
आह!

जबकि इधर दारा बौखलाया सा देख रहा था उस तमाशे को—
दारा! तूने एक नारी पर जुल्म किया है। और शायद तेरे जुल्मों की कोई थाह नहीं।
देख! मेरे मस्तक पर मच रही इस हलचल को देख दारा।
धरती के गर्भ में हलचल मचती है तो भूकम्प आ जाता है न...
...प्रलय आ जाती है न दारा... देख प्रलय आने वाली है। जो आयेगी सिर्फ तुझे भस्म करने के लिये।
खौफ से जड़ हो गया दारा
नहीं! नहीं!
सचमुच दारा के लिये वो क्षण प्रलय के थे—
और तब उसके मुंह से चीख नहीं हिचकी निकली थी। क्योंकि वह उसकी जिन्दगी की आखिरी सांस की हिचकी थी—

इधर कॉफी की टेबल पर वापस पहुँचा रोशनी का वह झमाका बदल चुका था चंदा में-
ब्लूम टिम

दूसरे ही पल-
आइये डॉक्टर साहब! पता नहीं अचानक ही उसे...अरे! चंदा कहां गई?

ठीक होने के बाद मैंदूसरी कॉफी बनाने चली गई थी मोनिका।
और कॉफी तैयार है।
मगर तुम्हारा वह दौरा?

थैंक्स गॉड! मैं तो घबरा ही गई थी।
सॉरी डॉक्टर!
नेवर माइंड। कभी-कभी अत्य धिक तनाव से ऐसा हो जाता है। इन्हें आराम करना चाहिए।
वो अपने आप ही ठीक हो गया।

और इधर रात का रक्षक डोगा जब शिप पर पहुंचा तो –
डोगा! ये कंकाल दारा का है।
ओह! मगर इसकी ये हालत कैसे हुई?
तब जो कुछ सोनाली व जगजीत ने उसे बताया उसे सुनकर डोगा का मस्तिष्क एक बार फिर अंतरिक्ष के चक्कर लगाने लगा था –
अब उसके करने के लिये वहां कुछ नहीं बचा था –
सारा काम शक्ति ने पहले ही निबटा दिया। खैर!

GREEN PAGE-55

प्रिय पाठक मित्रों,

नमस्कार, **डोगा-शक्ति** आपने पढ़ी। इस विशेषांक में आपका **शक्ति** से परिचय हुआ। आशा है आपको **शक्ति** पसंद आई होगी। इसी सैट में प्रकाशित कॉमिक **'आई मुसीबत'** में भी **शक्ति** का आगमन हुआ है। यदि आपने वह कॉमिक भी पढ़ी हो तो अपनी अमूल्य राय हमें पत्र द्वारा अवश्य भेजें। याद रखें, आपकी कॉमिक में आपके विचारों द्वारा लाए गए सुझाव ही कॉमिक की सफलता का राज है। यदि आप अपनी राय से हमें अवगत नहीं कराएंगे तो कॉमिक में आपका मनचाहा बदलाव हम नहीं ला पाएंगे। एक तरह से आपकी कॉमिक, आपका करेक्टर आपके सृजनात्मक विचारों से ही आगे बढ़ता है। अब **शक्ति** से आपकी मुलाकात होने जा रही है **भेड़िया** की आगामी कॉमिक **'जिन्दा पत्थर'** में व उसके पश्चात जून 1998 में **'परमाणु- शक्ति'** व **'ध्रुव-शक्ति'** में।

आगामी सैट में हम आपके लिए ला रहे हैं **'डोगा के हथियार'** सीरीज की एक कॉमिक, वॉल्यूम-1 **'मेरा कॉस्ट्यूम, मेरी बाइक'** इस कॉमिक में **डोगा** के लिबास के अंदर छिपी खासियतों का सुंदर वर्णन है। **डोगा** की मनु द्वारा डिजाइन की गई बाइक का सुंदर चित्रण व वर्णन है। 10 मई के सैट में आ रही है **डोगा के हथियार** सीरीज की दूसरी कॉमिक, वॉल्यूम-2 **'कुत्ते मेरे साथी'** इस कॉमिक में **डोगा** के कुत्ता साथियों की अद्भुत जानकारी है। हम आपको **डोगा** के ऐसे कुत्ता मित्रों की कहानियां सुनाएंगे जो कि आपने पहले कभी नहीं पढ़ी होंगी। इसके बाद मई में ही प्रकाशित हो रहे हैं इसी सीरीज के ही अन्य वॉल्यूम, वॉल्यूम-3 **'मेरी मशीनगन, मेरी राइफल'** व वॉल्यूम-4 **'मेरे हाथ, मेरे हथियार'**, इनमें **डोगा** की **गनों** की बारीक जानकारियों के साथ **डोगा** ने उन्हें कैसे प्राप्त किया, किस पर इस्तेमाल किया, इस विषय पर अनूठी नई कहानियां हैं। **डोगा** की कराटे प्रेक्टिस के लिए **'मेरे हाथ, मेरे हथियार'** एक अनूठी कॉमिक है। **डोगा** के सभी फैन्स के पास यह कॉमिकें जरूर होनी चाहिए। वे इसे अपनी कॉमिक कलेक्शन में जरूर सजाकर रखना चाहेंगे। चारों कॉमिक्सों के कवर, **थीरज वर्मा** व मनु द्वारा तैयार किए गए खूबसूरत कवर हैं व इनकी कहानियां लिखी हैं लेखक **भरत** ने **संजय गुप्ता** के सहयोग से! चित्रों में अपना कमाल दिखाया है आर्टिस्ट **विनोद** व **तौफीक** ने। अपनी कॉमिकें अपने पुस्तक विक्रेता के पास आज ही बुक कराएं।

खुशखबरी! आपकी **डोगा** के लैटर कॉलम की डिमांड पूरी की जा रही है। **डोगा** के विशेषांक **'रात की रानी'** से बस आपको करना है एक काम। **डोगा** के विषय में अपने सुझाव हमें इस पते पर तुरंत लिख भेजने हैं **एक्सप्लोसिव्स, राजा पॉकेट बुक्स, 330/1, बुराड़ी, दिल्ली-110084**

शक्ति-वर्ष में हमारे राइटर आर्टिस्टों ने भी अपना शक्ति परीक्षण किया। श्री अनुपम सिन्हा को 1 अप्रैल, 1998 अप्रैल फूल दिवस पर उनकी आंखों ने अप्रैल फूल बनाया। उनकी आंखें खून से भी ज्यादा लाल हो गईं और उस समय वे **नागराज** व **परमाणु** के विशेषांक **'सुरमा'** का आर्टवर्क बना रहे थे। अब उन लाल आंखों से घबराकर दोनों सुरमा भाग खड़े हुए। उनके सफेद पेजों पर हरे व पीले मानव आने को राजी ही नहीं हुए तब चार दिन बेचारे अनुपम जी अपनी आंखों को धोते रहे। दिल्ली के पॉल्यूशन को रोते रहे और फिर जाकर कहीं दोनों सुरमाओं को मना पाए। उधर **हनीफ जी** व **तरुण कुमार वाही** शिकार बने दिल्ली की खूनी सड़कों के 15 फरवरी 1998 को हनीफ जी जब **परमाणु** की कहानी **'आतिशबाज'** हमें देकर अपने टू व्हीलर पर सवार होकर निकले तो एक डी.टी.सी. की बस से टकरा गए। मेरे ख्याल में बस कमजोर थी व हमारी किस्मत कुछ ताकतवर निकली। वे बच गए टू व्हीलर ध्वस्त हो गया लेकिन इस हादसे में उनके सीधे हाथ में फ्रेक्चर आ गया जिसकी कीमत हम भुगत रहे हैं। आज दो महीने में वे केवल दो कहानियां ही लिख पाए वो भी उल्टे यानी बाएं हाथ से। उनके हाथ में कोहनी से ऊपर स्टील की प्लेट नट बोल्टों से कसी गई है। शायद उनका **इंस्पेक्टर स्टील** से बराबरी करने का विचार है। इधर वाही जी जब 31 मार्च 1998 को **डोगा** के विशेषांक **'कौन बड़ा जल्लाद'** की स्क्रिप्ट देकर दिन दहाड़े LIC की किस्त जमा कराने के लिए अपनी बाइक पर सवार होकर निकले तो आगे जल्लाद बनकर दौड़ रहे एक टैम्पो का टायर ब्रस्ट हो गया और टायर के रबड़ का एक टुकड़ा इतनी स्पीड से उनकी तरफ आया कि पहले उसने उनकी बाइक के लैग गार्ड को बिल्कुल मोड़ दिया फिर उनकी टांग से टकराया, उनकी टांग एकदम सुन्न हो गई। खैर, उस जल्लाद से तो वह बच गए, बचाई। और उन्होंने काम भी अगले दिन ही शुरू कर दिया। तो पाठको समाचार समाप्त हुए, यह थी खबरें आज तक इंतजार करें अगले **ग्रीन पेज** तक। आपके सुझावों के इंतजार में **ग्रीन पेज नं. 55, राजा पॉकेट बुक्स, 330/1, बुराड़ी, दिल्ली-110084**

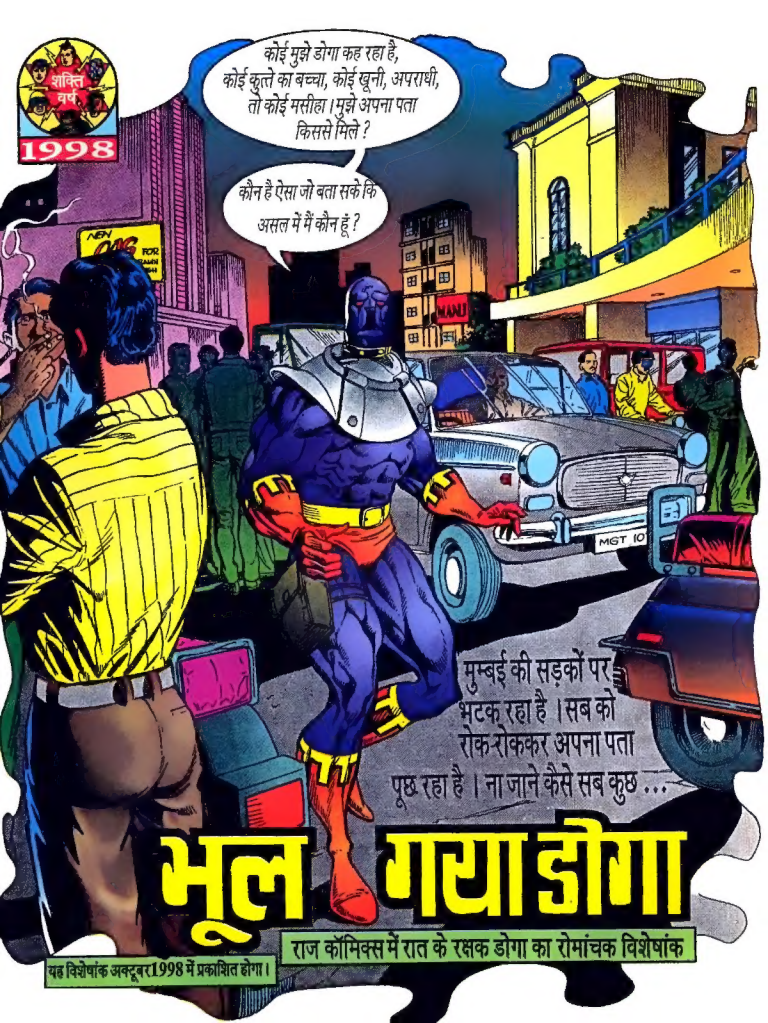
शक्ति वृत्त
1998
कोई मुझे डोगा कह रहा है, कोई कुत्ते का बच्चा, कोई खूनी, अपराधी, तो कोई मसीहा। मुझे अपना पता किससे मिले ?
कौन है ऐसा जो बता सके कि असल में मैं कौन हूँ ?
MGT 10
मुम्बई की सड़कों पर भटक रहा है । सब को रोक रोककर अपना पता पूछ रहा है । ना जाने कैसे सब कुछ ...
भूल गया डोगा
राज कॉमिक्स में रात के रक्षक डोगा का रोमांचक विशेषांक
यह विशेषांक अक्टूबर 1998 में प्रकाशित होगा।

हिंसा में ना भेड़िया कम है, ना डोगा।
अब जंग ही फैसला करेगी..
यह विशेषांक नवम्बर 1998 में प्रकाशित होगा।
शक्ति वर्ष
1998
KHEERA VEERA
कौन बड़ा जल्लाद
राज कॉमिक्स में डोगा और भेड़िया का रोमांचकारी टू इन वन विशेषांक

वॉल्यूम-1
मेरा कॉस्ट्यूम, मेरी बाइक
इस कॉमिक में डोगा के कॉस्ट्यूम व बाइक की बारीकी से जानकारी दी गई है।

वॉल्यूम-2
कुत्ते मेरे साथी
इस कॉमिक में डोगा के कुत्ते साथियों की जानकारी दी गई है। यह दोनों कॉमिकें बाजार में उपलब्ध हैं।

वॉल्यूम-3
मेरी मशीनगन, मेरी रायफल
इस कॉमिक में डोगा की गनों की जानकारी दी गई है।

वॉल्यूम-4
मेरे हाथ, मेरे हथियार
इस कॉमिक में डोगा की जूडो कराटे की ट्रेनिंग दी गई है।

वॉल्यूम-5
डोगा की कसरतें
इस कॉमिक में डोगा अपनी रोजाना की कसरत के बारे में जानकारी देगा।

वॉल्यूम-6
डॉग ट्रेनिंग
इस कॉमिक में डोगा आपको कुत्तों की ट्रेनिंग के गुर सिखाएगा।

डॉग ट्रेनिंग

डोगा के हथियार

प्रत्येक कॉमिक का मूल्य 8.00 बुक स्टॉल पर ना मिलने पर हमें लिखें।
प्रकाशक : **राजा पॉकेट बुक्स**
330/1, बुराड़ी, दिल्ली–110084

डोगा के उपलब्ध कॉमिक्स

★ 786
★ तिरंगा
★ ठंडी आग
★ खाकी और खद्दर
★ दो फौलाद
★ खतरनाक
★ आई लव यू
★ डोगा-शक्ति
★ शेर का बच्चा
★ मर्द और मुर्दा
★ खूनी पलेथिया
● **डोगा 1**
कर्फ्यू, ये है डोगा, मैं हूं डोगा
● **डोगा 2**
अदरक चाचा, भेंडा, चोर-सिपाही
● **डोगा 3**
कुत्ता फौज, इंस्पेक्टर चौता, मुकाबला, बुलडॉग
● **डोगा 4**
हड़ताल, डोगा जिंदाबाद, विच्छू
● **डोगा 5**
आखिरी गोली, डोगा और झबरा, सुपर डॉग
● **डोगा 6**
गोल्डन हत्यारा, कुत्ता राज, जबरदस्त

● इस निशान वाली कॉमिक्सों का मूल्य : 25.00

भोकाल के उपलब्ध कॉमिक्स

☐ भोकाल
☐ अतिक्रूर
☐ भोकाल तिलिस्म में
☐ तिलिस्म टूट गया
☐ भोकाल और फूचांग
☐ अतिक्रूर और गजोख
☐ विकोडा
☐ सबसे बड़ा हत्यारा
☐ पीकू पकोड़िया
☐ तुरीन
☐ कपाला
☐ जहर घाटी
☐ शूतान की शादी
☐ शैतान बुढ़ढ़े
☐ तीन चुड़ैलें
☐ तन्त्रा
☐ ब्रजा
☐ युद्ध जीतूंगा मैं
☐ जल उठा रेगिस्तान
☐ रेत का भोकाल
☐ बुड़ैल मां
☐ दिव्यास्त्र
★ बौना भोकाल
★ भोकाल की तलवार
★ विकटव्यूह
★ मृत्युजीत
★ डंकिनी
★ कपालिका
★ शैतान बेटा
★ महायुद्ध
★ कलंका
★ खतरों की धरती
★ आखिरी निशानी

परमाणु के उपलब्ध कॉमिक्स

☐ परमाणु
☐ बाज
☐ लट्टू
☐ मक्खी
☐ चट्टान
☐ जौक
☐ वृक्षा
☐ ब्लेड
☐ खोर
☐ फौलाद
☐ स्ट्रीट गैंग
☐ डाइनामाइट
☐ अपाहिज गुण्डे
☐ ब्लैक आउट
☐ डायमंड किलर
☐ अण्डरवर्ल्ड
☐ ऑलपिन
☐ आखिरी उड़ान
☐ एक और परमाणु
★ हौंकार
★ रिवॉल्वर
★ रोड रोलर
★ ब्लैक वैल्ट
★ कहर
★ टक्कर
★ खरोंच
★ कैंसर
★ तूफ़ानचाल
★ अब मरेगा परमाणु

● **28 परमाणु**
परमाणु, आग, बुलैटप्रूफ़
● **32 परमाणु**
ब्लैक आउट, मक्खी, जौक, डायमंड किलर

बांकेलाल के उपलब्ध कॉमिक्स

☐ राजकोष के लुटेरे
☐ बांकेलाल और यक्षकुमार
☐ मुकद्दर का धनी
☐ शादी का षड्यंत्र
☐ पारस पत्थर
☐ लाश की तलाश
☐ खतरे का अवतार
☐ चालीस चोर
☐ परियों की मुसीबत
☐ जादूगर डांगा
☐ मुर्दा शैतान
☐ षड्यंत्रकारी आत्मा
☐ मौत का त्रिशूल
☐ अंगुलिमाल
☐ तालाब के चोर
☐ तिलिस्मी जाल
☐ राक्षसों की खेती
☐ धरती-जरूर
☐ खुजालराज
☐ बांकेलाल कंकाल लोक में
☐ बांकेलाल सर्पलोक में
☐ बांकेलाल अश्वलोक में
☐ बांकेलाल और चोरखोपड़ी
☐ बांकेलाल तरैयालोक में
☐ नरभक्षी लुटेरा
☐ बुतबुला का दैत्य
☐ चमत्कारी वृक्ष
☐ लिखे जो खत तुझे
☐ लो मैं आ गया
☐ दुमतारा
☐ काटो-काटो
☐ रोंटाऊवाज
☐ हम किसी से कम नहीं
☐ नागपंचमी
☐ तीर मार खां
★ बांकेलाल और तिलिस्मदेव
★ पीछे पड़ा भालू

☐ इस निशान के कॉमिक्सों का मूल्य 8/- ★ इस निशान के कॉमिक्सों का मूल्य 16/-

© प्रकाशकाधीन : राजा पॉकेट बुक्स 330/1 बुराड़ी, दिल्ली 84